मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता । दुनियां के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है । दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 26 अगस्त 1990 50 पैसे

मार्क्सवाद

यूं तो हिटलर और इन्दिरा गांधी समेत न जाने कौन-कौन अपने आपको समाजवादी कहते रहे हैं पर समाजवादी लेबल की दावेदारी में रूस-चीन के शासक गिरोहों ने अब तक बाजी मार रखी थी । साठ-सत्तर साल से जाने-अनजाने में लगभग हर प्रकार का पूंजीवादी प्रचार रूस-चीन जैसे राज्य-पूंजीवादी देशों को समाजवादी देश, कम्युनिस्ट देश कहता रहा है ।

रूस-चीन जैसे देशों में फौज और खुफिया पुलिस की चौकीदारी में मजदूरों के क्रूर दमन-शोषण को राज्य-पूंजीवादी प्रचार आमतौर पर छिपाता रहा है और इन इलाकों को मजदूरों के स्वर्ग बता कर राज्य-पूंजीवादी देशों से बाहर मजदूरों व अन्य मेहनतकशों के असन्तोष को राज्य-पूंजीवादी दल-दल में धकेलने की कोशिशें करता रहा है । भारत में सी पी आई—सी पी एम—नक्सलवादी—आर एस पी—एस यू सी आई आदि खुलेआम रूस या चीन जैसे राज्य-पूंजीवाद की वकील रही हैं । रूस-चीन की नुक्ताचीनी करने वाले ट्राटस्कीवादी व "शुद्ध" लेनिनवादी टोलों का लक्ष्य भी बुनियादी तौर पर राज्य-पूंजीवाद ही रहा है । इन सब धड़ों के मतभेदों में एक प्रमुख मुद्दा लाल फौज और खुफिया पुलिस वाले तन्त्र की लीडरी रहा है—माओ या स्तालिन या ट्राटस्की या लेनिन को खुदा ने कुछ और उमर बख्श दी होती तो कोई समस्या ही नहीं रहती! निषेध का निषेध कर मूर्ति-भंजक प्रतिमा-पुजारी बन गये····· और हकीकत ने राज्य-पूंजीवादी किलों में दरारें डाल दी, समय गुजरने के साथ वहां मजदूरों का असन्तोष अधिकाधिक भड़कने लगा ।

दूसरी तरफ पुराने किस्म के पूंजीवादी प्रचार ने रूस-चीन आदि में दमन-शोषण की घटनाओं को नमक-मिर्च लगा कर प्रचारित किया । यह प्रचार मजदूरों को यह समझाने की कोशिश करता रहा है कि संघर्ष से कोई फायदा नहीं होता—सफल होने पर भी फल कड़वे ही मिलेंगे ! पर हाल की रूस-चीन-पूर्वी यूरोप की घटनाओं से पहले इस किस्म के पूंजीवादी प्रचार को ज्यादा सफलता नहीं मिल रही थी । हाल ही में राज्य-पूंजीवादी किलों में मची हड़कम्प ने इसे नव-शक्ति क्लीनिक वाली ताकत दी है·····

पूंजीवादी प्रचार तो खैर अपना काम करता रहा है पर मजदूर आन्दोलन की असली दिक्कत यह रही है कि साम्यवादी आन्दोलन काफी समय से कमजोर पड़ता गया है । इसके बारे में विस्तार से चर्चा आगे करेंगे फिर भी यहां इतना जरूर कहेंगे कि कम्युनिस्ट आन्दोलन के कमजोर पड़ने का बुनियादी कारण यह रहा है कि पूंजीवाद में आये जोइन्ट स्टाक कम्पनी-लिमिटेड फर्म-सरकारी कारखाने वाले बदलाव ने जो समस्यायें पेश की हैं उनसे निपटने के लिए मार्क्सवाद का आवश्यक विकास अब तक नहीं हो पाया है । इन हालात में पूंजीवादी कुप्रचार और अज्ञान का सचेत भण्डाफोड़ नहीं हो पाया—मजदूर बेशक हर रूप-रंग के पूंजीवादी दमन-शोषण के खिलाफ स्वयंस्फूर्त ढंग से संघर्ष करते रहे हैं पर यह अपने आप में काफी नहीं होता ।

पूंजीवाद के खिलाफ मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी आन्दोलन को सचेत तौर पर, समझ-बूझ कर चलाने की कोशिश ही मार्क्सवाद है । दमन-शोषण से मुक्ति के लिये मजदूरों के इस हथियार पर रूस-चीन-पूर्वी यूरोप की हाल की घटनाओं के बाद पूंजीवादी हमले बहुत तेज हो गये हैं । आज लगभग एक सुर में पूंजीवादी नारे लगा रहे हैं कि मार्क्सवाद फेल हो गया है । इन पूंजीवादी हमलों से निपटने के लिये मार्क्सवाद का विकास तो जरूरी है ही, अधिक से अधिक मजदूरों को मार्क्सवाद की जानकारी होना भी जरूरी है । इस काम में एक योगदान के तौर पर हम मार्क्सवाद के बुनियादी उसूलों तथा समस्यायें जिनसे पार पाना है के सम्बन्ध में यह लेखमाला शुरू कर रहे हैं । पाठकों की टीका-टिप्पणियों से हमें सहायता मिलेगी । [जारी]

—ओ

—o—

आटोपिन

दिल्ली की गुरुद्वारा राजनीति से सक्रिय तौर पर जुड़े आटोपिन मैनेजमेंट के प्रमुख का सितारा काफी दिन से पूंजीवादी व्यवस्था के संकट की चपेट में आ कर गर्दिश में है—— आटोग्लाइड, आटोक्लच, आटोस्प्रिंग, जॉय इन्जीनियरिंग बन्द पड़ी हैं तो आटोपिन मजदूरों का प्रोविडेन्ट फण्ड और ई एस आई का पैसा अपनी जेब में डालकर गाड़ी खींचने के चक्कर में वारन्ट के समय मैनेजमेन्ट प्रमुख को लुक-छिप कर फैक्ट्री से भागना पड़ा है ।

अपनी नाक से छह इन्च आगे तक ही देख पाने की पूंजी के नुमाइन्दों की आम क्षमता ही आटोपिन मैनेजमेन्ट की भी है । इसलिये वह भी पूंजीवादी व्यवस्था ही संकट का बुनियादी कारण है के तथ्य से आंख मूंद कर राहत के लिये टोटकों की तलाश में रहती है । ढेरों भिन्नताओं के बावजूद पूंजी के सब नुमाइन्दों में सार की बातें सांझी हैं इसलिए इस तलाश में आटोपिन मैनेजमेन्ट ने भी पूंजी के अन्य नुमाइन्दों की ही तरह यह टोटका ढूंढा है कि मजदूर कुर्बानी दें तभी फैक्ट्री चल पायेगी । इसलिए पीला झंडा उखाड़ कर लाल झंडा लगाने वाली यूनियन से तीन साल पहले की एग्रीमेंट में आटोपिन मैनेजमेन्ट ने दो सौ मजदूर निकालने का सौदा किया था । लेकिन कम मजदूरों से अधिक काम लेने के लिये जरूरी मशीनरी आदि पर खर्च के लिये बैंक लोन मिलने में समय लगा । इसलिये कुछ समय पहले हुई एग्रीमेंट में साम-दाम-दण्ड-भेद के जरिये पचास परसेंट वर्क लोड तो मजदूरों पर बढ़ाया गया पर वर्कर निकालने का मामला अब तक ठन्डा पड़ा था ।

यहां जिक्र कर दें कि मालिक द्वारा जेब से पैसा लगा कर कारखाना खोलने वाला पूंजीवाद अब बीते जमाने की बात हो गई है । अब तो बैंक आदि से पैसे ले कर कम्पनियां खोली जाती हैं । इसलिये मजदूरों को उस पूंजीवादी प्रचार की खिल्ली उड़ानी चाहिए जो कहता है कि पैसा लगाया है तो मुनाफा लेगा ही । पूंजी के नुमाइन्दे अब आमतौर पर पूंजीपति (या मालिक) के रूप में नहीं बल्कि मैनेजमेन्ट के रूप में मजदूरों की चमड़ी उतारते हैं । खैर, आटोपिन पर लौटें ।

आटोपिन मैनेजमेन्ट को बैंक लोन मिल गया है और इस पैसे से जन्मी नई भट्टियों, लेलैन्ड में भी टेल्को की तरह क्रेन, फोर्क लिफ्टर आदि ने दो सौ मजदूरों की बलि की मांग की है । इसलिये मजदूरों को नौकरी से निकालना मैनेजमेन्ट के एजेन्डा पर नम्बर एक काम बन गया है ।

आटोपिन मैनेजमेन्ट प्रमुख की गुरुद्वारा राजनीति वाली दादागिरी फरीदाबाद के मजदूर 1978-79 में आटोपिन मजदूरों के संघर्ष के दौरान देख चुके हैं । इधर डरा धमका कर वर्करों से इस्तीफे लेने में मैनेजमेन्ट अपने उस रूप की झलक फिर दिखा रही है । लेकिन इस समय आटोपिन मजदूरों के खिलाफ मैनेजमेन्ट की मुख्य पालिसी फूट डालने और मजदूरों को आपस में भिड़ा कर अपना काम निकालने की लगती है । जनता दल समर्थक लाल और हरे झन्डों के तले अपने पट्ठों को अगुआ बना कर मजदूरों में फूट डालने, वर्करों को आपस में भिड़ाने के लिए मैनेजमेन्ट तिकड़म पर तिकड़म कर रही है ।

आटोपिन की पिछले आठ-दस महीनों की कुछ घटनाओं पर गौर करें:- 1. हरे झन्डे को गेट पर न लगने देने के लिए मैनेजमेन्ट ने लाल झन्डे वालों से खार खाये मजदूरों को पूरब और लोकल के नाम पर बांटने की कोशिश की । फैक्ट्री के अन्दर लाठी-सरिये-बोतलें इकट्ठी करवा कर हरा झन्डा लगाने आये गुन्डा गिरोह को मार कर भगवा दिया । हरे झन्डे के चक्कर में पड़े दस-बारह मजदूरों को सस्पैन्ड कर दिया । 2. इसके बाद हरा झन्डा रोको अभियान में अगुआई कर रहे बाहरी लीडर को ठोकर मरवा कर तथा स्वयं ठोकर मार कर मैनेजमेन्ट ने अपने दो पट्ठों को खुला चरने को छोड़ दिया । 3. अचानक मैनेजमेन्ट ने लाल झन्डा लगा कर

(शेष अगले पेज पर)

संपर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद 121001

नेपाल

पूंजीवादी जनतन्त्र की एक झलक

जुलाई के प्रथम सप्ताह में नेपाल सरकार ने हड़तालों पर पाबन्दी की घोषणा की। हड़तालों पर रोक लगाने वाली यह सरकार हाल ही में काफी खून-खराबे के बाद पूंजीवादी एकतन्त्र वाली "पंचायती" सरकार का तख्ता पलट कर "जनतन्त्र" की लहर पर सवार हो कर सत्ता में आई है। और, नेपाल में लम्बे समय से पूंजीवादी एकतन्त्र के खिलाफ संघर्ष कर रही पूंजीवादी जनतन्त्र समर्थक शक्तियों ने सत्ता में आते ही हड़तालों पर पाबन्दी लगा कर पूंजीवादी जनतन्त्र की एक झलक दिखा दी है।

भारत में बड़ी संख्या में काम कर रहे नेपाली मजदूर यहाँ चल रहे पूंजीवादी जनतन्त्र के नाटकों से अच्छी तरह परिचित हैं। फिर भी, भारत में नेपाली मजदूर विभिन्न किस्म की पूंजीवादी व निम्न-पूंजीवादी, खासकरके राज्य-पूंजीवादी धाराओं के चक्कर में पड़कर नेपाल में "जनतन्त्र की स्थापना के लिये वर्गों के संयुक्त मोर्चे" का समर्थन करते रहे हैं। लेकिन पूंजीवादी एकतन्त्र हो चाहे पूंजीवादी जनतन्त्र, या फिर उनका कोई मिला-जुला रूप, मजदूरों का अधिकाधिक शोषण व इसके लिये दमन हर प्रकार के पूंजीवादी शासन का चरित्र है—— और पूंजीवादी शासन के रूपों में फर्क करने का दौर अब बीत गया है। इसलिए जनतान्त्रिक नेपाल सरकार द्वारा हड़तालों पर पाबन्दी से सबक सीख कर मजदूरों को मजदूर वर्ग के स्वतन्त्र संगठन के निर्माण के लिये काम करना चाहिये। जनता व गरीब जैसे गोल-मोल शब्दों को छोड़ कर मजदूरों के स्वतन्त्र संगठन से इस समय नेपाल में "विरोध में खड़े" विभिन्न राज्य-पूंजीवादी रुझानों से निपटने में भी मजदूरों को आसानी होगी। नेपाली मजदूरों व भावना से कम्युनिस्ट लोगों से इस सम्बन्ध में विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे।

और हाँ, राजा या रानी का मतलब सामन्तवाद नहीं होता—इंग्लैन्ड में आज भी महारानी सजी-धजी बैठी है।

—o—

(पहले पेज का शेष)

चर रहे इन सांडों को अलग कर दिया। एक सांड से हरा झन्डा लगवा दिया और दूसरे सांड को सस्पैन्ड करवा दिया। इस चाल के जरिये आटोपिन मैनेजमेन्ट ने खुली गुन्डागर्दी का ठेका हरा झन्डा धारियों को दिया है (कुछ सस्पैन्ड लोगों को वापस ले कर अपने लगुओं-भगुओं के साथ उन्हें हरे झन्डे के तले एकत्र कर दिया है) तथा लाल झन्डाधारी साँड के कुर्बानी का सेहरा बांध कर मजदूरों के सम्भावित संघर्ष में कांटे बोने को छोड़ दिया है।

दो पठ्ठों की पीठ पर हाथ रखना और अलग-अलग समय पर उन्हें भिन्न-भिन्न मुखौटों में मजदूरों के बीच डाल कर मैनेजमेन्टों द्वारा अपना काम करवाना अब पूंजी के नुमाइन्दों की आम चाल हो गई है ऐसे में **मजदूरों के लिये पहला काम यह बनता है कि वे बिचौलियों के चक्कर में हरगिज न पड़ें। संघर्ष और केवल संघर्ष ही मजदूरों के हितों को देखभाल कर सकता है इसलिये मौजूदा हालात में संघर्ष के तौर तरीकों पर विचार करना मजदूरों का दूसरा काम बनता है** आने वाले दिनों में तेज होने वाले मैनेजमेन्ट के हमले का मुकाबला करने के लिये कार्यवाही के बारे में आटोपिन मजदूरों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे।

—o—

पढ़िये और पढ़ाइये

सचेत मजदूर का

क-ख-ग

निर्जीव से जीव-पशु से मानव-भारत में मानव-आदिम साम्यवादी समाज-स्वामी समाज-भारत में जातियां-सामन्तवाद-सरल माल उत्पादन-विश्व मन्डी-पूंजीवादी माल उत्पादन-पूंजी और भारत में पूंजी-कांग्रेस पार्टी और मोहनदास करमचन्द गांधी-गांधीवाद नेहरूवाद-पूंजी आज-सचेत मजदूरों के कार्यभार।

50 पेज 5/—

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, फरीदाबाद-121001 से डाक द्वारा मगवा सकते हैं।

PUBLISHED

ROSA LUXEMBURG'S 'THE ACCUMULATION OF CAPITAL', an abridged version with an Introduction by KAMUNIST KRANTI.

250 pages 30/-

Majdoor Library, Autopin Jhuggi, Faridabab-121001

थॉमसन प्रेस

तीन साल पहले मैनेजमेन्ट ने जनरल मैनेजर को हटाया था। तब बहुत बदनाम यूनियन लीडर को हटा कर मैनेजमेन्ट नये यूनियन लीडर को भी लाई थी। नये लीडर को मैनेजमेन्ट द्वारा खुलेआम दो हजार रुपये मन्थली देने पर भी पुराने लीडर से छुटकारा पाने पर मजदूरों ने राहत की सांस ली थी।

दो हजार की मन्थली व अन्य टुकड़ों के बदले में नये यूनियन लीडर ने कम्पनी की 'गड़बड़ा रही स्थिति को सम्भलवाने" के नाम पर मजदूरों को मिल रही करीब तीस लाख रुपये सालाना की सहूलियतें बन्द करने में मैनेजमेन्ट को सहयोग दिया——तीन-चार दिन वाला सालाना टूर बन्द कर दिया गया है, सालाना पिकनिक खत्म कर दी गई है, फैक्ट्री दिवस के कार्यक्रम बन्द कर दिये गये हैं। इसके साथ ही नये लीडर ने एग्रीमेंट करके मजदूरों पर वर्क लोड बढ़वाया——समझौते पर दस्तखत करके साइड मीटिंग में मजदूरों द्वारा इस पर अमल रोकने को कहना तो लीडरी की कला का प्रदर्शन था। खैर, इस प्रकार हालात यहाँ तक पहुंच गई कि थामसन प्रेस के कुछ मजदूरों ने पुराने लीडर के चक्कर लगाने शुरू कर दिये। थॉमसन प्रेस के मजदूरों में हाल में बढ़ रही मार-पीट की घटनाओं की जड़ में एक पहलू यह है।

पर मजदूरों के बीच गुटबाजी बढ़ने का मुख्य कारण मैनेजमेन्ट की दो पठ्ठों की पीठ पर हाथ रखने की पालिसी है। पूंजीवादी व्यवस्था के बढ़ते संकट की चपत थामसन मैनेजमेन्ट पर भी पड़ रही है। मैनेजमेन्ट कहती है कि काम मिलने में दिक्कत हो रही है और कम्पीटीशन की वजह से कम्पनी की हालत गड़बड़ा रही है। स्थिति सुधारने के नाम पर वर्क लोड बढ़ाने व सहूलियतों में कटौती के बाद मैनेजमेन्ट अब कहती है कि लाटरी डिपार्टमेन्ट ओखला शिफ्ट करने दी जाये या दो-ढ़ाई सौ वर्कर निकालने दिये जायें अन्यथा कम्पनी गड़बड़ा जायेगी। वैसे मजदूरों का अन्दाजा है कि मैनेजमेंट 500 वर्कर निकालना चाहती है। यूं तो पूंजीवादी व्यवस्था के बढ़ते संकट के साथ सट्टेबाजी बढ़ती जा रही है—लाटरी उद्योग फल-फूल रहा हैं—पर संकट से बचने की मैनेजमेन्ट की स्कीमें सट्टेबाजी से अधिक कुछ नहीं हैं। फिर भी, अपने दाँव को मजबूत करने के लिए मैनेजमेन्ट बदनाम हो रहे नये लीडर और बदनाम हो चुके पुराने लीडर के इर्द-गिर्द मजदूरों को बांट कर अपने मन-माफिक मजदूरों की बलि देने की तैयारी कर रही है।

बिचौलियों को ठोकर मार कर, अपनी एकता बनाए रख कर व नई हालात के मुताबिक संघर्ष की राह चुनकर ही थामसन प्रेस के मजदूर अपने हितों की देखभाल कर सकेंगे व मैनेजमेन्ट और उसके पठ्ठों से निपट सकेंगे इस संबन्ध में मजदूरों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे।

बाटा

बाटानगर में बड़े पैमाने पर छंटनी और सहूलियतों में कटौती वाले हमले के बाद बाटा मैनेजमेन्ट ने फरीदाबाद फैक्ट्री के मजदूरों को हमले का निशाना बनाया है। कम्पनी की खराब हालत सुधारने के नाम पर मैनेजमेंट ने वर्क लोड में बढ़ोतरी और मजदूरों को मिल रही सहूलियतों में कटौती के प्रस्ताव रखे हैं। कैन्टीन के मामले में मैनेजमेन्ट ने मजदूरों पर मुख्य हमला केन्द्रित किया है। यूनियन लीडर कैन्टीन सहूलियतों में कटौती के बदले सौदेबाजी करके 6 से 8 से 11 रुपए वर्करों को देने की बातें करते रहे हैं। पर 24 जुलाई को आम सभा में बाटा मजदूरों ने स्पष्ट कर दिया कि वे कैन्टीन सहूलियतों में कटौती पर मैनेजमेन्ट से बात चीत तक के खिलाफ हैं। मजदूरों द्वारा अपने विचार स्पष्ट कर दिए जाने के बावजूद बाटा में कैन्टीन सहूलियतों में कटौती पर सौदेबाजी की सम्भावना बनी हुई है इसलिए इस सम्बन्ध में मजदूरों की चौकसी जरूरी है।

बाटा मैनेजमेन्ट के मजदूरों पर बढ़ रहे हमले मजदूरों पर दुनियां-भर में बढ़ रहे पूंजीवादी हमलों के अनुरूप हैं। मजदूरों पर बढ़ रहे यह हमले किसी की मनमर्जी की उपज नहीं हैं बल्कि यह पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकट का अनिवार्य परिणाम हैं। इसलिए हर पूंजीवादी हमले का विरोध करने के साथ-साथ मजदूरों को सम्पूर्ण पूंजीवादी व्यवस्था पर हल्ला बोलने की तैयारी करनी चाहिए। इसके लिये जरूरी है कि मजदूर रूस-चीन-पूर्वी यूरोप के मजदूरों के संघर्षों से राज्य-पूंजीवाद की हकीकत समझें तथा दक्षिण कोरिया-ब्राजील-अर्जेन्टीना-अमरीका-इंग्लैन्ड-नेपाल—भारत में मजदूरों के संघर्षों से पूंजीवादी जनतन्त्र की असलियत समझें। विभिन्न किस्म के पूंजीवादी एकतन्त्र हों चाहे अलग-अलग तरह के पूंजीवादी जनतन्त्र, मजदूरों पर हमले करने में वे एक-दूसरे से पीछे नहीं हैं। ऐसे में मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी सिद्धान्त को जानना और उसका वर्तमान समस्याओं से निपटने के लिए विकास करना सर्वोपरि महत्व का काम है। विभिन्न अनुभवों से गुजर चुके बाटा फरीदाबाद के मजदूर इस काम में हाथ बटाने के लिए अच्छी स्थिति में है।

—x—

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं गां. मेमो. न. से मुद्रित